

मार्गदर्शक

मा.शरदचंद्र जी पवार

(अध्यक्ष, स्वत शिक्षण संस्था, सातारा)

मा.डॉ.अनिल पाटील

(चेअरमन, स्वत शिक्षण संस्था, सातारा)

मा.भाई एस.एम.पाटील (पूर्व विधायक)

(उपाध्यक्ष, स्वत शिक्षण संस्था, सातारा)

मा.संजीव पाटील (उद्योजक)

(चेअरमन, मध्य विभाग, स्वत शिक्षण संस्था, सातारा)

मा.प्राचार्य डॉ. गणेश ठाकूर

(सचिव, स्वत शिक्षण संस्था, सातारा)

मा.प्राचार्य डॉ.डी.डी.पाटील

(सहसचिव, स्वत शिक्षण संस्था, सातारा)

मा.अॅड. धनाजीराव साठे (पूर्व विधायक)

(सदस्य, स्थानिक व्यवस्थापन समिति)

मा.डॉ.रमण दोशी

(सदस्य, स्थानिक व्यवस्थापन समिति)

आयोजक समिति

मा.प्राचार्य डॉ.पंजाबराव रोंगे

उपप्राचार्य, डॉ.अब्दुलशुकर शेख

प्रा. नितीन सोहनी

प्रा. दिलीप घोलप

प्रा. अनिल कांबले

प्रा. बालाजी शेवाले

प्रा. प्रेमचंद गायकवाड

प्रा.डॉ. समाधान माने

प्रा.डॉ. रमेश शिंदे

प्रा. जयवंत पालकर

प्रा. महेश गायकवाड

प्रा.डॉ. सतीश घाडगे

प्रा. प्रकाश रणदिवे

श्री. एस.एच.गेंगजे

प्रा.डॉ. राणू कदम

प्रा.डॉ. किशोर पवार

प्रा.डॉ. फैमिदा बिजापुरे

प्रा.डॉ. सुरैय्या शेख

प्रा.डॉ. अनिल सालुंखे

प्रा. झाकिर मुलाणी

प्रा.डॉ. गिरीश काशिद

प्रा.डॉ. कामायनी सुर्वे

प्रा.डॉ. इनुस शेख

प्रा.डॉ. प्रशांत नलावडे

प्रा. करीम मुल्ला

श्री. मोहन योदव

संयोजक समिति

प्रा. प्रकाश ताकभाते : ८१४९१०५१०६

प्रा.डॉ. प्रमोद परदेशी : ८६०५४२६७९१

हिंदी विभाग

कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा

जि. सोलापुर - ४१३२०९

फोन नं. ०२१८३-२३४०२६

ई.मेल-accmadha@yahoo.com

website-www.erayat.org/AACC

बुक पोस्ट

प्रति,
श्री / श्रीमती

प्रेषक,
प्राचार्य,
कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा
जि. सोलापुर ४१३२०९



Principal
Arts & Commerce College
Madha, Dist. Solapur

श्री स्वामी समर्थ ट्रस्टर्स, माढा
मो. ८८०६५२२६७३



स्वत शिक्षण संस्था संचालित,

कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा

जि. सोलापुर

नॅक पुनर्मूल्यांकन 'वी' ग्रेड

हिंदी विभाग

एवं

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

एक द्विविधीय राष्ट्रीय खंगोली

विषय : - 'इक्कीसवीं सदी के हिंदी कथा
साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य'।

दिनांक- १२ सितम्बर २०१५



-आयोजक-

प्रा.प्रकाश ताकभाते

मो. १४९१०५१०६

-स्वागताध्यक्ष-

प्राचार्य डॉ.पंजाबराव रोंगे

मो. ७५८८०२१४७३

मा. महोदय/महोदया,
सादर अभिवादन।

आपको यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी, कि हमारे महाविद्यालय में 'इक्कीसवीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य' इस विषय पर दिनांक-१२ सितम्बर २०१५ को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। प्रस्तुत संगोष्ठी में आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

रयत शिक्षण संस्था

ज्ञान दान के पवित्र और उदात्त कार्य हेतु पद्मभूषण डॉ. कर्मवीर भाऊराव पाटील जी ने रयत शिक्षण संस्था की स्थापना सन १९१९ में की। रयत शिक्षण संस्था का प्रारंभ कर उन्होंने दरिद्रता की खाई में गिरे हुए बहुजन समाज को जीवन का नया मार्ग दिखाया। उन्होंने गाँव-गाँव जाकर ज्ञान मंदिर निर्माण किये और गरीब, दुर्बल, पीडित लोगों के लिए शिक्षा के द्वार खोल कर महाराष्ट्र में शैक्षिक क्रांति की।

महाविद्यालय

रयत शिक्षण संस्था द्वारा संचलित कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा की स्थापना सन १९७० ई. में हुई। आज यहाँ विविध पाठ्यक्रमों के अंतर्गत एक हजार से अधिक छात्र अध्ययन कर रहे हैं। अंग्रेजी और वाणिज्य विषयों में अनुसंधान की सुविधा यहाँ उपलब्ध है। सोलापुर जिले के शैक्षिक तथा सामाजिक विकास में इस महाविद्यालय ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हिन्दी विभाग

रेल, डाक, बैंक, पुलिस, सुरक्षा आदि के साथ-साथ माध्यमिक, उच्चमाध्यमिक तथा उच्च शिक्षा क्षेत्र में विभाग के भूतपूर्व छात्र आज कार्यरत हैं। अनेकों ने पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की है।

चर्चा सत्र

इक्कीसवीं सदी का युग भूमंडलीकरण तथा वैश्वीकरण का युग है। इस युग में वैज्ञानिक तथा तकनीकी साधनों के कारण सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन आया। इसका प्रभाव मानवी जीवन पर विशेषतः नारी जीवन पर अधिक पडा। परिणामतः नारी जीवन मूल्य अधिक तेजी के साथ परिवर्तित हुए। इन बदले हुए मूल्यों की चर्चा करना ही संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य है। हिन्दी कथा साहित्य में इसका अंकन व्यापक रूप में हुआ है। अतः 'इक्कीसवीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य' इस विषय पर दिनांक १२ सितम्बर २०१५

को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दो सत्रों में किया है। प्रथम सत्र में 'इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यास साहित्य चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य' और द्वितीय सत्र में 'इक्कीसवीं सदी के हिन्दी कहानी साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य' इन विषयों पर विचार विमर्श होगा। अतः आप से अनुरोध है, कि दिनांक ३० अगस्त २०१५ तक उपर्युक्त में से किसी एक विषय पर आलेख भेजें तथा उपस्थित रहकर संगोष्ठी को सफल बनाने में अपना सक्रिय सहयोग दें।

कृपया अपना शोध आलेख कृतिदेव ०१० फॉन्ट १४ में टाइप कर Pramodbpardeshi@gmail.com किवा shinderamesh007@gmail.com इस मेल पर भेजें।

सहभाग शुल्क -

विवरण	शुल्क
प्रतिभागी प्राध्यापक	५००/-
शोध छात्र	२००/-

कार्यक्रम पत्रिका

दिनांक - १२ सितम्बर २०१५

पंजीकरण तथा चायपान
(समय- सुबह ९.०० से १०.०० तक)

उद्घाटन समारंभ

(समय - सुबह १०.०० से १२.०० तक)

स्वागत -	प्रा.प्रकाश ताकभाते (अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा)
उद्घाटक -	डॉ. रतनकुमार पांडेय (प्रोफेसर, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई)
वीजभाषण -	डॉ. नवमीत चौहान (सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आनंद, गुजरात)
प्रमुख अतिथि -	प्राचार्य डॉ. डी.डी. पाटील (सहसचिव, उच्च शिक्षण, रयत शिक्षण संस्था, सातारा)
अध्यक्ष -	प्राचार्य डॉ. पंजाबराव रोंगे (कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा)

* प्रथम सत्र *

समय - सुबह १२.०० से २.०० तक	
विषय -	'इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य'।
विषय प्रस्तोता -	डॉ. अशोक वाचुळकर (आजरा महाविद्यालय, आजरा)
प्रपत्र पठन -	डॉ. रतनकुमार पांडेय (प्रोफेसर, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई)
अध्यक्ष -	डॉ. अर्जुन घरत (अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महात्मा फुले महाविद्यालय, पनवेल, नई मुंबई)
भोजन-	समय २.०० से ३.०० तक

* द्वितीय सत्र *

समय - दोपहर ३.०० ते ५.०० तक	
विषय -	'इक्कीसवीं सदी के हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य'।
विषय प्रस्तोता -	डॉ. हुबनाथ पांडेय (प्रोफेसर, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई)
प्रपत्र पठन-	डॉ. अर्जुन घरत (अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महात्मा फुले महाविद्यालय, पनवेल, नई मुंबई)

समापन समारोह

समय सायं. ५.०० से ६.०० तक	
प्रमुख अतिथि -	डॉ. हिंदुराव घरपनकर (एम.एस. कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, विजयवाडा, आंध्र प्रदेश)
अध्यक्ष -	डॉ. पंजाबराव रोंगे (प्राचार्य, कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा)
प्रमुख उपस्थिति -	डॉ. रतनकुमार पांडेय डॉ. नवमीत चौहान डॉ. अर्जुन घरत डॉ. हुबनाथ पांडेय
आभार -	प्रा.डॉ. प्रमोद परदेशी (कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा)

रयत शिक्षण संस्था संचलित,
कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक -१२/०९/२०१५

संगोष्ठी वृतांत

रयत शिक्षण संस्था संचलित, कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा जि. सोलापुर (महाराष्ट्र) के हिन्दी विभाग तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दि. १२/०९/२०१५ को 'इक्कीसवीं सदी के हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य' इस विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था।

महाराष्ट्र, गुजरात तथा आंध्र प्रदेश के ४२ अध्यापकों ने तथा ११ छात्रों ने संगोष्ठी के लिए अपने नाम का पंजीकरण कराया।

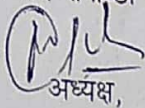
सुबह १०.०० बजे संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। प्रारंभ में रयत शिक्षण संस्था के संस्थापक पद्मभूषण डॉ. कर्मवीर भाऊराव पाटील जी की प्रतिमा के पूजन से समारोह का श्रीगणेशा हुआ। महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष तथा संगोष्ठी के संयोजक प्रा. प्रकाश ताकभाते जी ने सबका स्वागत करते हुए मंच पर उपस्थित महानुभावों का परिचय दिलाया और संगोष्ठी का प्रयोजन स्पष्ट किया। संगोष्ठी के उद्घाटक तथा बीजभाषक डॉ. नवनीत चौहान (सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आनंद, गुजरात) जी ने अपने भाषण में वर्तमान युग में स्त्री-पुरूषों की बदलती सोच पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 'स्त्री लेखन और स्त्री से जुड़े लेखन का मूल्यांकन इस दृष्टि से भी चुनौती पूर्ण है, कि वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आये परिवर्तनों से वक्त ने जो करवट ली है और अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व के प्रति जो नई चेतना प्रायः सभी तबकों में आयी है, वह पूरी कायनात को बदलने के प्रति सक्षम है, कटिबद्ध है, प्रतिबद्ध है।'

अपने अध्यक्षीय भाषण में मुंबई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. हुबनाथ पांडेय जी ने वैश्वीकरण के इस युग में हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पंजाबराव रोंगे जी तथा उप प्राचार्य डॉ. ए.ए. शेख जी मंच पर उपस्थित थे।

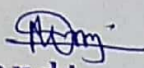
प्रस्तुत संगोष्ठी को दो सत्रों में विभाजित किया था। प्रथम सत्र में उपन्यास साहित्य और द्वितीय सत्र में कहानी साहित्य पर चर्चा हुई। 'इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यास साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य' इस विषय का प्रस्तुतीकरण डॉ. कामायनी सुर्वे (महात्मा फुले महाविद्यालय, पिंपरी, पुणे) ने किया। डॉ. नवनीत चौहान जी (सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आनंद गुजरात) की अध्यक्षता में संपन्न इस सत्र में २० प्रतिभागियों ने अपने प्रपत्र प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र में विषय प्रस्तुतीकरण डॉ. हुबनाथ पांडेय जी (मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई) ने किया। 'इक्कीसवीं सदी के हिन्दी कहानी साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य' इस विषय पर आयोजित इस सत्र की अध्यक्षता प्रा. डॉ. अर्जुन घरत जी (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, महात्मा फुले महाविद्यालय, पनवेल, नई मुंबई) ने किया। इस सत्र में १७ प्रतिभागियों ने अपने प्रपत्र पढ़े।

संगोष्ठी का समापन समारोह ५ बजे महाविद्यालय के मा. प्राचार्य डॉ. पंजाबराव रोंगे जी की अध्यक्षता में और प्रधान अतिथि डॉ. हिन्दुराव घरपणकर जी (प्राचार्य, एस.एम. कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, विजयवाडा, आंध्रप्रदेश) की उपस्थिति में संपन्न हुआ। प्रतिभागियों ने संगोष्ठी की सफलता पर टिप्पणी की। प्रा. डॉ. प्रमोद परदेशी जी के कृतज्ञता ज्ञापन के बाद संगोष्ठी का समापन हुआ।


अध्यक्ष,

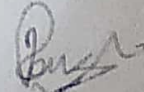
हिन्दी विभाग


Co-ordinator,

I.Q.A.C.

Arts & Commerce College,
Madha, Dist. Solapur.




प्राचार्य

कला व वाणिज्य महाविद्यालय

माढा, जि. सोलापूर.


Principal,

Arts & Commerce College
Madha, Dist. Solapur

समारोप समारंभ ४.०० ते ५.००

- प्रमुख पाहुणे -** प्राचार्य डॉ.टी.एस.पाटील
(अध्यक्ष, इतिहास अभ्यास मंडळ, शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर)
- विशेष उपस्थिती -** प्राचार्य डॉ.सीताराम गोसावी
(एल.बी.पी.महाविद्यालय, सोलापूर)
- प्राचार्य डॉ. सोपानराव जावळे
(सुवर्णलता गांधी महाविद्यालय, वैराग जि. सोलापूर)
- प्रा.डॉ. विजय माने
(सदस्य अभ्यास मंडळ अकौंटन्सी बोर्ड, शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर)
- अध्यक्ष -** डॉ.डी.एच.निंबाळकर
(अधिष्ठाता, सामाजिकशास्त्र विद्याशाखा सोलापूर विद्यापीठ, सोलापूर)
- आभार -** प्रा. दिनकर मुर्कुटे

मार्गदर्शक

- मा.शरचंद्रजी पवार
(अध्यक्ष, स्वतः शिक्षण संस्था सातारा)
- मा.डॉ.अनिल पाटील
(चेअरमन, स्वतः शिक्षण संस्था, सातारा)
- मा.भाई एस.एम.पाटील (माजी आमदार)
(उपाध्यक्ष, स्वतः शिक्षण संस्था सातारा)
- मा.संजीव पाटील
(चेअरमन, मध्य विभाग, स्वतः शिक्षण संस्था सातारा)
- मा.प्राचार्य डॉ. गणेश ठाकूर
(सचिव, स्वतः शिक्षण संस्था सातारा)
- मा.प्राचार्य डॉ.डी.डी.पाटील
(सहसचिव, स्वतः शिक्षण संस्था, सातारा)
- मा.अॅड. धनाजीराव साठे (माजी आमदार)
(सदस्य, स्थानिक व्यवस्थापन समिती)
- मा.डॉ.रमण दोगी
(सदस्य, स्थानिक व्यवस्थापन समिती)

संयोजक समिती



मा.प्राचार्य डॉ.पंजाबराव रोंगे
उपप्राचार्य, डॉ.अब्दुलशुक्र शेख



प्रा. प्रकाश जाकमाने
प्रा. अनिल कांबळे
प्रा. विलीप घोलप
प्रा. बालाजी शेवाळे
प्रा.डॉ. रमेश शिंदे
प्रा. जयवंत पालकर
प्रा. स्वामी व्हनकडे
प्रा. सुर्यकांत जोगवंड
प्रा. नितीन सोहनी
प्रा.डॉ. समाधान माने
प्रा.डॉ. प्रमोद परदेशी
प्रा. महेश गायकवाड
प्रा. करीम मुद्दा
प्रा.डॉ. सतीश घाडगे
प्रा. प्रकाश रणदिवे
प्रा. केशव चव्हाण
प्रा. नामदेवराव गरड
प्रा.डॉ. राजेंद्रसिंह लोखंडे
प्रा.डॉ. नभा काकडे

प्रा.डॉ. विकास कुदम
प्रा.डॉ.चंद्रकांत चव्हाण
प्रा.भारत जाधव
प्रा.मास्तीराव सरके
प्रा. विलास अंधारे
प्रा.डॉ.विष्णू साधमारे
प्रा.डॉ. किशोर गव्हाणे
प्रा.डॉ. एस.पी.शिंदे
प्रा.डॉ. जयश्री कुलकर्णी
प्रा.डॉ. दादासाहेब पाटीळे
प्रा. डॉ. हनुमंतराव लॉडे
प्रा. सरला चव्हाण
प्रा. सुमन केंद्रे
प्रा.डॉ. अशोक कोखेलकर
प्रा.डॉ. राजेंद्र गायकवाड
प्रा. सोनाली गिरी
प्रा. ज्योती सूर्यसे
प्रा. विजय भाजे
प्रा. डॉ. रवि जाधव

संयोजक

- प्रा. प्रेमचंद गायकवाड ९९२२४५२४२७
प्रा. नारायण शेंडगे ९९२२४५३८६५
प्रा. किरण पाटील ९६५७४००६९९

इतिहास विभाग

कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा

जि. सोलापूर - ४१३२०९

फोन नं. ०२१८३-२३४०२६
ई.मेल-accmadha@yahoo.com
website-www.erayat.org/AACC

प्रति,
श्री / श्रीमती

बुक पोस्ट

प्रेषक,
प्राचार्य,
कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा
जि. सोलापूर ४१३२०९



स्वतः शिक्षण संस्थेचे,

कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा

जि. सोलापूर

नॅक पुनर्भूल्यांकन 'बी' ग्रेड

इतिहास विभाग

व
विद्यार्थी अनुदान आयोग यांच्या
संयुक्त विद्यमान आयाजित

द्वेज द्विस्तरीय राज्यस्तरीय चर्याद्वारा

विषय : - सत्यशोधक चळवळ आणि समकालीन
भारतीय सामाजिक सुधारणा चळवळी

दिनांक ११ व १२ सप्टेंबर २०१५



-समन्ययक-

प्रा.प्रेमचंद गायकवाड
मो. ९९२२४५२४२७

-स्वायत्ताध्यक्ष-

प्राचार्य डॉ.पंजाबराव रोंगे
मो. ७५८८०२१४७३

रयत शिक्षण संस्थेचे
कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माळा
जि. सोलापूर
नॅक पुनर्मूल्यांकन 'बी' ग्रेड
इतिहास विभाग

व

विद्यापीठ अनुदान आयोग यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित
दोन दिवसीय राज्यस्तरीय चर्चासत्र
"सत्यशोधक चळवळ आणि समकालीन भारतीय सामाजिक सुधारणा चळवळी"
दि. ११ व १२ सप्टेंबर २०१५

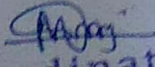
चर्चासत्र अहवाल

कला व वाणिज्य महाविद्यालय माळा, इतिहास विभागाने दोन दिवसीय चर्चासत्र आयोजित केले. दि. ११/०९/२०१५ रोजी सकाळी १०.०० वाजता उद्घाटन समारंभ यशस्वी झाला. समारंभास प्रमुख पाहण्यांच्या हस्ते दीपप्रज्वलन व प्रतिमापुजन झाले. महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. पंजाबराव रोंगे यांनी कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक केले. महाविद्यालयाची व कार्यक्रमाची माहिती शोडक्यात सांगितली. कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यामागची पार्श्वभूमी सांगितली. इतिहास विभागप्रमुख प्रा. प्रेमचंद गायकवाड यांनी पाहण्यांचा परिचय करून दिला. चर्चासत्राचा विषय आणि भारतातील महाराष्ट्राची आजची स्थिती व सामाजिक सुधारणा चळवळीत महाराष्ट्राची भूमिका विषय केले. आजच्या स्थितीला या विषयासंबंधी विद्यार्थी व प्राध्यापकांमध्ये सविस्तर सखोल चर्चा होणे गरजेचे असल्याचे सांगितले.

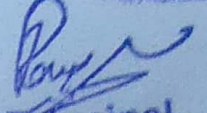
कार्यक्रमाचे उद्घाटन व बीजभाषण मा. श्री. उत्तमराव पाटील (इतिहास व समकालीन चळवळीचे अभ्यासक) यांनी महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले यांचे सत्यशोधक चळवळ स्थापन करण्यामागची पार्श्वभूमी उद्दिष्टे व ध्येय कामकाजपध्दतीविषयी माहिती दिली. दीनमित्रकार मुकुंदराव पाटील यांचे सत्यशोधक चळवळीतील कार्याचा सविस्तर आढावा घेतला. तत्कालीन परिस्थितीत अनेक सामाजिक, आर्थिक अडचणी असताना महात्मा फुलेंनी कशाप्रकारे प्रस्थापितांना विरोध करून सामाजिक चळवळीची मुहूर्तमेढ रोवली. तिची वाटचाल कशी झाली आणि दीनमित्रकारांनी आपल्या कालखंडात ही चळवळ सर्व सामान्यांत रूजविण्याचा सामाजिक बदल घडविण्यासाठी सातत्यपूर्ण प्रयत्न केले. कार्यक्रमाचे अध्यक्ष मा. आर. डी. गायकवाड यांनी आपल्या रुजविण्याचा सामाजिक बदल घडविण्यासाठी सातत्यपूर्ण प्रयत्न केले. कार्यक्रमाचे अध्यक्ष मा. आर. डी. गायकवाड यांनी आपल्या अध्यक्षीय भाषणात महाराष्ट्रातील सामाजिक सुधारणा चळवळ व महात्मा फुलेंची सत्यशोधक चळवळ याविषयी सविस्तर विवेचन केले. या सुधारणा चळवळीचे योगदान सांगताना आधुनिक महाराष्ट्र व भारताच्या उभारणीमध्ये महत्त्व सांगितले. समकालीन अडचणी व त्यावर केलेली मात 'फुले-शाहू-आंबेडकर-कर्मवीर विचारसरणीची निर्मिती यामधूनच रयत शिक्षण संस्थेची स्थापना झाली. वैचारिक मंथनातून चळवळ उभारली.

कार्यक्रमाच्या पहिल्या सत्रामध्ये तज्ज्ञ मार्गदर्शक व समकालीन चळवळीचे अभ्यासक प्राचार्य डॉ. सीताराम गोसावी यांनी यांनी महाराष्ट्रामध्ये एकोणिसाव्या शतकात सामाजिक, धार्मिक सुधारणा चळवळीचा उदय, विकास व वैचारिक प्रचार व प्रसार झाला. वैचारिक क्रांतीमधून समाजसुधारकांची तरुण पिढी तयार झाली. महाराष्ट्रातच नव्हे तर संपूर्ण भारतामध्ये सामाजिक सुधारणा चळवळीचा विस्तार, विकास आणि पर्यायाने आधुनिक महाराष्ट्राची उभारणी व स्वातंत्र्य चळवळ उभारली. या सर्व घटना, घडामोडींमधून सामाजिक मत व मत परिवर्तन झाले. महात्मा यांचे सर्वांगीन कार्याबरोबरच सावित्रीबाईंचे शैक्षणिक चळवळीतील योगदान, काव्यरचना यामध्ये तत्कालीन सामाजिक चळवळीचे मथन इत्यादी विषयावर सखोल, सविस्तर व समकालीन चळवळीस पुरक वातावरण निर्मिती कशी झाली याविषयी चर्चा केली.

दूसऱ्या सत्रामध्ये तज्ज्ञ प्रा. प्रकाश मसराम (इतिहास विभाग, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई) यांनी सामाजिक सुधारणा चळवळ आणि महात्मा फुलेंच्या सत्यशोधक चळवळीचा महाराष्ट्रातील वचित, उपेक्षित, दूरीक्षित आदिवासी समाजावर कशाप्रकारे वैचारिक


Co-ordinator,
I.Q.A.C.
Arts & Commerce College,
Madha, Dist. Solapur.




Principal,
Arts & Commerce College
Madha, Dist. Solapur

मंथनाने प्रभावित होऊन सुधारणा चळवळीत सहभागी झाले. शिक्षणाचे महत्त्व ओळखून अलीकडील काळात आदिवासी समाजही बऱ्याच प्रमाणात पारंपरिक प्रथा परंपरा सोडून आधुनिकतेकडे वाटचाल करत आहे. वैचारिक क्रांतीने सामाजिक, धार्मिक परिवर्तन झाले. अनेक क्रांतिकारक निर्माण झाले. प्रस्थापितांच्या विरोधात वैचारिक प्रगती करू लागला. आदिवासींच्या जीवनामधील आमुलाग्र बदलास महात्मा फुलेंचे विचार कारणीभूत असल्याचे सांगितले.

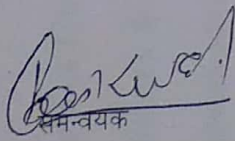
तिसऱ्या सत्रामध्ये प्रा.सचिन गरुड (तज्ज्ञ मार्गदर्शक, इस्लामपूर, सांगली) यांनी वारकरी संप्रदायाची वाटचाल समकालीन वारकरी संप्रदाय आणि सत्यशोधक चळवळ या विषयावर सविस्तर चर्चा, मुक्त चिंतन केले. महात्मा फुलेंची चळवळ सामाजिक, धार्मिक बदलास पुरक ठरत असताना वारकरी संप्रदाय प्रस्थापित रूढी-परंपरा, विविध अनिष्ट प्रथा कालबाह्य असल्याचे सांगून आधुनिक विचारांचा स्वीकार करण्यास समाजमन व मतपरिवर्तन करत होते हे विविध उदाहरणांसहित सांगितले.

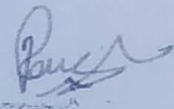
चौथ्या सत्रामध्ये प्रा. डॉ. नारायण भोसले (इतिहास विभाग, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई) भारतीय सामाजिक, धार्मिक, राजकीय सुधारणा चळवळ आणि महात्मा फुले यांची सत्यशोधक या परस्परपूरक चळवळी वैचारिक क्रांतीच्या माध्यमातून सर्वांगीण सामाजिक बदल घडवित असताना स्त्रीवर्ग दुर्लक्षित होता. महात्मा फुलेंनी आपल्या विचारप्रवाहामध्ये वचित, उपेक्षित दीनदुबळ्या, बहुजन वर्गाला मुख्य प्रवाहात आणण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य केले. बरोबरीने साकवत्रीबाईंना शिक्षित करून भारतातील प्रथम शिक्षिका म्हणून सक्षम बनविते. या सर्व वर्गासाठी शिक्षणाची दारे उघडली. बरोबरीने मुलींना शिक्षण दिले. म्हणूनच सुधारणा चळवळ सर्वसमावेशक कशाप्रकारे झाली यांचा सविस्तर आढावा घेतला.

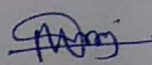
पेपर वाचनाच्या खुल्या सत्रामध्ये डॉ. अतुल कदम, रामचंद्र कुंभार, अपर्णा गुरव, दादासाहेब पाटोळे इत्यादींनी आपल्या शोधनिबंधातून सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक समस्या त्यावर उपाययोजना आणि सत्यशोधक चळवळ इत्यादी विविधांगी मार्गाने चिंतन मंथन केले. विविध विषयांचा सविस्तर आढावा घेण्यात आला.

कार्यक्रमाच्या समारोप समारंभामध्ये कार्यक्रमाचे प्रमुख पाहुणे, प्राचार्य डॉ. टी. एस. पाटील (कोल्हापूर) यांनी दोन दिवसीय चर्चासत्राचा आढावा घेऊन महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले समकालीन भारतातील सामाजिक सुधारणा चळवळी विविध विचारांचा प्रभाव त्यातूनच वैचारिक संघर्ष, धार्मिक सुधारणामधून सामाजिक चळवळ कशाप्रकारे विकसित होत गेली. तत्कालिन कालखंड प्राचीन मध्ययुगीन परिस्थिती यावर मात करून फुल्यांनी सत्यशोधक चळवळ उभारणी चळवळीच्या माध्यमातून सामाजिक परिवर्तन कशाप्रकारे घडविले. यांचा सविस्तर चिकित्सक पध्दतीने मांडणी केली. महात्मा फुलेंची सत्यशोधक चळवळ व आजची सामाजिक स्थितीवरही भाष्य केले.

दोन दिवसीय राज्यस्तरीय चर्चासत्रातून विविध तज्ज्ञ व्याख्याते, मार्गदर्शक आणि प्राध्यापकांनी चर्चासत्राच्या विषयावर विचारमंथन केले. विविध विषयास विविधांगाने स्पर्श करून चळवळीचे महत्त्व पटवून दिले. विद्यार्थ्यांसह मोलाचे मार्गदर्शन केले.


समन्वयक


प्राचार्य
कला व शास्त्रिक महाविद्यालय
महा, जि. सोलापूर.


Co-ordinator,
I.Q.A.C.
Arts & Commerce College,
Madha, Dist. Solapur.




Principal,
Arts & Commerce College
Madha, Dist. Solapur